९. ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण

९.१ इतिहास के साधन और उनका संरक्षण
९.२ कुछ विख्यात संग्रहालय
९.३ ग्रंथालय और अभिलेखागार
९.४ कोश

आज हमारे पास इतिहास के अनेक साधन और उन साधनों के आधार पर लिखे गए ग्रंथ भी उपलब्ध हैं । यह सब अनेक इतिहासकारों द्‌वारा किए गए अथक परिश्रम का फल है । ये अत्यंत अमूल्य ऐतिहासिक धरोहरें हैं । इनका संरक्षण-संवर्धन करने और उनमें से विशिष्ट दस्तावेजों (अभिलेख), ग्रंथों, पुरावस्तुओं को प्रदर्शित करने का कार्य संग्रहालय, उनसे संबंधित अभिलेखागार और ग्रंथालय करते हैं । उनके कार्यों की वैज्ञानिक जानकारी लोगों तक पहुँचे; इसके लिए उनके द्‌वारा शोधकार्यात्मक पत्र-पत्रिकाएँ तथा अन्य साहित्य प्रकाशित किया जाता है ।

जिन दस्तावेजों और प्राचीन वस्तुओं को प्रदर्शित नहीं किया जाता परंतु वे ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होते हैं; उन्हें अभिलेखागार में संरक्षित रखा जाता है । इन दस्तावेजों और प्राचीन वस्तुओं को अनुसंधानकर्ताओं अथवा शोधकर्ताओं को उनकी आवश्यकतानुसार उपलब्ध कराया जाता है । ग्रंथालय इन ग्रंथों का संरक्षण और प्रबंधन का कार्य करते हैं ।

९.१ इतिहास के साधन और उनका संरक्षण

इतिहास के साधन प्राप्त करना, उनका अंकन/लेखन कर उनकी सूची बनाना, पांडुलिपियों, प्राचीन ग्रंथों, पुरातन वस्तुओं जैसे भौतिक साधनों की साफ-सफाई करना और उन्हें प्रदर्शित करना जैसी बातें बहुत सावधानी और ध्यानपूर्वक करनी पड़ती हैं । उन कार्यों के लिए विभिन्न विषयों की कृतियों का प्रशिक्षण लेना आवश्यक होता है । उचित प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात ही ये कार्य किए जा सकते हैं ।

१. मौखिक साधन

- लोकपरंपरा के गीतों, कहानियों आदि का संकलन करना ।
- संकलित साहित्य/सामग्री का वर्गीकरण और विश्लेषण करना, अन्वयार्थ स्थापित करना ।
- अनुसंधानित मौखिक साहित्य का प्रकाशन करना ।

आवश्यक प्रशिक्षण : (१) समाज विज्ञान (२) सामाजिक मानव विज्ञान (३) मिथक और भाषा विज्ञान (४) ग्रंथालय प्रबंधन (५) इतिहास और इतिहास अनुसंधान पद्‌धति (६) अनुसंधानपर लेखन ।

२. लिखित साधन

- ताम्रपट, कार्यालयीन (दफ्तर) दस्तावेज, निजी पत्र और दैनंदिनी (डायरी), ऐतिहासिक ग्रंथ, पांडुलिपियाँ, चित्र, फोटो, प्राचीन ग्रंथ आदि अभिलेखों/दस्तावेजों का संग्रहण एवं संपादन करना ।
- दस्तावेजों का संरक्षण करने हेतु आवश्यक साफ-सफाई करना तथा अन्य रासायनिक प्रक्रियाएँ करना ।
- दस्तावेजों का ऐतिहासिक मूल्यांकन करना ।
- विशिष्ट दस्तावेजों को प्रदर्शित करना ।
- संपादित साहित्य और अनुसंधान के निष्कर्ष प्रकाशित करना ।

आवश्यक प्रशिक्षण

१. ब्राह्मी, घसीटा (सर्राफा), फारसी (पर्शियन) जैसी लिपियों और उनके विकास क्रम का ज्ञान ।
२. इतिहासकालीन समाज संरचना और परंपराएँ, साहित्य और संस्कृति, राजसत्ताएँ, शासनव्यवस्था आदि का प्राथमिक ज्ञान ।
३. विविध चित्रशैलियों, शिल्पकला की शैलियों और उनके विकास क्रम का ज्ञान ।
४. कागजों के प्रकार, स्याही और रंगों का ज्ञान ।

५. उकेरे हुए लेखों के लिए उपयोग में लाया गया पत्थर, धातुओं के स्वरूप के बारे में जानकारी ।
६. दस्तावेजों/अभिलेखों की स्वच्छता और संवर्धन के लिए आवश्यक रासायनिक प्रक्रियाओं के लिए लगने वाले उपकरण और रसायनों की जानकारी ।
७. संग्रहालय की दीर्घाओं में प्रदर्शनी का प्रबंधन और सूचना एवं प्रौद्योगिकी ।
८. अनुसंधानपर लेखन ।

३. भौतिक साधन

- प्राचीन वस्तुओं का संग्रहण, कालखंड और प्रकारों के अनुसार वर्गीकरण करना, सूची बनाना ।
- पुरातन वस्तुओं का संवर्धन करने के लिए आवश्यक साफ-सफाई और अन्य रासायनिक प्रक्रियाएँ करना ।
- चुनिंदा पुरातन वस्तुओं अथवा उनकी प्रतिकृतियों की प्रदर्शनी आयोजित करना ।
- पुरातन वस्तुओं से संबंधित अनुसंधानपर लेखों को प्रकाशित करना ।
- वनस्पतियों और प्राणियों के जीवाश्मों का वर्गीकरण करना । सूची बनाना ।
- चुनिंदा जीवाश्मों अथवा उनकी प्रतिकृतियों की प्रदर्शनी का आयोजन करना ।

आवश्यक प्रशिक्षण

१. पुरातत्त्वीय अध्ययन प्रणाली, सिद्धांत और प्राचीन संस्कृति का परिचय ।
२. पुरातन वस्तुएँ बनाने के लिए उपयोग में लाये गए पत्थरों, खनिजों, धातुओं, चिकनी मिट्टी जैसे साधनों के प्रादेशिक स्रोतों और उनकी रसायन विज्ञान से संबंधित विशेषताओं का ज्ञान ।
३. पुरातन वस्तुओं की साफ-सफाई और अन्य रासायनिक प्रक्रियाओं के लिए लगनेवाले उपकरणों और रसायनों की जानकारी ।
४. विभिन्न कला शैलियों और उनके विकास क्रम का ज्ञान ।
५. पुरातन वस्तुएँ और जीवाश्मों की प्रतिकृतियाँ बनाने का कौशल ।
६. संग्रहालय की दीर्घाओं में प्रदर्शनी का प्रबंधन करना और सूचना एवं प्रौद्योगिकी ।
७. अनुसंधानपर लेखन ।

९.२ कुछ विख्यात संग्रहालय

मध्ययुग में यूरोप के राजघरानों के लोग और संपन्न व्यक्ति कलावस्तुओं का संग्रह करते थे । इन कलावस्तुओं के प्रबंधन की आवश्यकता अनुभव हुई । इसी आवश्यकता में से संग्रहालय की अवधारणा का उदय हुआ ।

लुव्र संग्रहालय, फ्रांस : लुव्र संग्रहालय की स्थापना पैरिस नगरी में हुई । यह स्थापना अठारहवीं शताब्दी में हुई । फ्रांस के राजघराने के व्यक्तियों द्वारा एकत्रित की कलावस्तुओं का संग्रह पहले लुव्र संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया । उसमें विश्वविख्यात इतालवी चित्रकार लियोनार्दो-द-विंसी द्वारा चित्रित

मोनालिसा

बहुचर्चित चित्र 'मोनालिसा' का समावेश है । सोलहवीं शताब्दी में प्रथम फ्रांसिस फ्रांस नरेश था । लियोनार्दो-द-विंसी फ्रांस नरेश प्रथम फ्रांसिस के आश्रय में था । नेपोलियन बोनापार्ट अपने आक्रमणों के समय स्वदेश में बड़ी मात्रा में कला वस्तुएँ ले आया था । इन कला वस्तुओं के कारण लुव्र संग्रहालय के संग्रह में बड़ी मात्रा में वृद्धि हो गई । इस समय इस संग्रहालय में अश्मयुग से लेकर आधुनिक समय तक की ३ लाख ८० हजार से अधिक कला वस्तुएँ हैं ।

ब्रिटिश संग्रहालय, इंग्लैंड : ब्रिटिश संग्रहालय की स्थापना लंदन में ई.स. की अठारहवीं शताब्दी में हुई । तत्कालीन प्रकृति वैज्ञानिक सर हैंस स्लोअन ने अपने संग्रह की लगभग इकहत्तर हजार वस्तुएँ इंग्लैंड नरेश द्वितीय जॉर्ज को सुपुर्द कीं । उनमें अनेक चित्र, ग्रंथ, वनस्पतियों के नमूने आदि का समावेश था । आगे चलकर अंग्रेजों द्वारा अपने आधिपत्यवाले

विभिन्न उपनिवेशों से स्वदेश में लाई गईं कला वस्तुओं और प्राचीन अवशेषों के कारण ब्रिटिश संग्रहालय में वस्तुओं की संख्या बढ़ती गई । इस समय इस संग्रहालय में लगभग ८० लाख वस्तुएँ संग्रहित हैं । इस संग्रहालय में भारत की अनेक पुरातन वस्तुओं का समावेश है।

ब्रिटिश संग्रहालय, इंग्लैंड

नैशनल म्यूजियम ऑफ नैचरल हिस्ट्री, यूनाइटेड स्टेटस् ऑफ अमेरिका : यह प्राकृतिक इतिहास का संग्रहालय है । इसका प्रारंभ पहले १८४६ ई. में अमेरिका के स्मिथ सोनियन इन्स्टिट्यूशन संस्थान के प्रबंधन में हुआ । यहाँ वनस्पतियों, प्राणियों के अवशेषों और जीवाश्म खनिजों, पत्थरों, मानव प्रजातियों के जीवाश्मों और पुरातन वस्तुओं के १२ करोड़ से अधिक नमूने संग्रहित हैं ।

नैशनल म्यूजियम ऑफ नैचरल हिस्ट्री

समझ लीजिए :

भारत के प्रसिद्ध संग्रहालय

इंडियन म्यूजियम-कोलकाता; नैशनल म्यूजियम-दिल्ली; छत्रपति शिवाजी महाराज वस्तुसंग्रहालय-मुंबई; सालारजंग म्यूजियम-हैदराबाद; द कैलिको म्यूजियम ऑफ टेक्स्टाइल्स-अहमदाबाद भारत के विख्यात संग्रहालयों में से कुछ संग्रहालय हैं ।

भारत के संग्रहालय : कोलकाता का 'भारतीय संग्रहालय' भारत के प्रथम संग्रहालय-'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बेंगाल' संस्थान द्वारा १८१४ ई. में स्थापित हुआ । चेन्नई में १८५१ ई. में शुरू हुआ 'गवरमेंट म्यूजियम' भारत का दूसरा संग्रहालय है । १९४९ ई. में दिल्ली के 'राष्ट्रीय वस्तु संग्रहालय' (नैशनल म्यूजियम) की स्थापना हुई । इस समय भारत के विभिन्न राज्यों में अनेक संग्रहालय हैं । अधिकांश बड़े संग्रहालयों के अपने अभिलेखागार और ग्रंथालय होते हैं । कुछ संग्रहालय विश्वविद्यालयों के साथ संलग्न होते हैं । ऐसे संग्रहालयों के माध्यम से 'संग्रहालय विज्ञान' विषय से संबंधित विविध पाठ्यक्रमों का अध्यापन किया जाता है ।

भारत में कुछ प्रमुख संस्थान और विश्वविद्यालय हैं; जो संग्रहालय विज्ञान से संबंधित स्नातक और पदविका पाठ्यक्रम उपलब्ध कराते हैं :

१. राष्ट्रीय वस्तु संग्रहालय, दिल्ली
२. महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय, वड़ोदरा
३. कोलकाता विश्वविद्यालय, कोलकाता
४. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
५. अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
६. जिवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

छत्रपति शिवाजी महाराज वस्तु संग्रहालय, मुंबई : १९०४ ई. में मुंबई के कुछ प्रतिष्ठित नागरिकों ने इकट्ठे आकर प्रिंस ऑफ वेल्स के भारत आगमन के स्मरणार्थ एक वस्तु संग्रहालय स्थापित करने का निर्णय लिया । १९०५ ई. के नवंबर महीने में इस संग्रहालय के भवन की नींव रखी गई तथा इस संग्रहालय का नाम 'प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम ऑफ वेस्टर्न इंडिया' निश्चित किया गया । १९९८ ई. में संग्रहालय का नाम बदलकर 'छत्रपति शिवाजी महाराज वस्तु संग्रहालय' किया गया ।

छत्रपति शिवाजी महाराज वस्तु संग्रहालय, मुंबई

संग्रहालय की वास्तु का निर्माण कार्य इंडो-गोथिक शैली में किया गया है । इस वास्तु को मुंबई नगरी की 'प्रथम श्रेणी की सांस्कृतिक विरासत इमारत' का दर्जा दिया गया है । संग्रहालय में कला, पुरातत्त्व और प्रकृति का इतिहास इन तीन वर्गों में विभाजित लगभग पचास हजार पुरातन वस्तुएँ संग्रहित की गई हैं

९.३ ग्रंथालय और अभिलेखागार

ज्ञान और जानकारी के भंडारगृह ग्रंथालय हैं । ग्रंथालय विज्ञान का प्रबंधन विज्ञान, सूचना एवं प्रौद्योगिकी, शिक्षा विज्ञान जैसे विषयों के साथ निकटतम संबंध है । ग्रंथालयों द्वारा ग्रंथों का संकलन करना, उनका वैज्ञानिक ढंग से आयोजन करना, उनका संरक्षण और संवर्धन करना, जानकारी के स्रोतों का प्रसारण करना जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य संपन्न किए जाते हैं । उनमें बहुत-से कार्य अद्यतन संगणकीय प्रणाली द्वारा किए जाते हैं । पाठकों को उनकी आवश्यकतानुसार निश्चित ग्रंथ उपलब्ध करा देना; यह ग्रंथालय प्रबंधन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य है ।

माना जाता है कि तक्षशिला विश्वविद्यालय का ग्रंथालय (ईसा पूर्व लगभग पाँचवीं शताब्दी से ई.स.की पाँचवीं शताब्दी), मेसोपोटेमिया के असीरियन साम्राज्य का सम्राट असुरबानीपाल का ग्रंथालय (ईसा पूर्व सातवीं शताब्दी) और इजिप्त के अलेक्जांड्रिया का ग्रंथालय (ईसा पूर्व चौथी शताब्दी) संसार के सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथालय थे ।

तमिलनाडु के तंजौर का 'सरस्वती महल ग्रंथालय' ई. स. की सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी के नायक राजाओं के कार्यकाल में बाँधा गया । १६७५ ई. में व्यंकोजीराजे भोसले ने तंजौर को जीत लिया और अपना स्वयं का राज्य स्थापित किया । व्यंकोजीराजे भोसले और उनके वंशजों ने सरस्वती महल ग्रंथालय अधिकाधिक संपन्न बनाया । उनमें सरफोजी राजे भोसले का महत्त्वपूर्ण योगदान था । उनकी स्मृति में १९१८ ई. में इस ग्रंथालय को उनका नाम दिया गया । इस ग्रंथालय के संग्रह में लगभग उनचास हजार ग्रंथ हैं ।

भारत में अनेक ग्रंथालयों में से कुछ ग्रंथालय विशेष उल्लेख करने योग्य हैं । उनमें कोलकाता की 'नैशनल लाइब्रेरी', दिल्ली की 'नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी', हैदराबाद की 'स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी', मुंबई की 'लाइब्रेरी ऑफ एशियाटिक सोसाईटी' और 'डेविड ससून लाइब्रेरी' आदि ग्रंथालयों का समावेश होता है ।

अभिलेखागारों का प्रबंधन रखना तकनीकी दृष्टि से ग्रंथालय प्रबंधन का ही एक अंग है । महत्त्वपूर्ण अंकनवाले कागजातों/दस्तावेजों में किसी भी प्रकार का परिवर्तन न करते हुए उन्हें सुरक्षित रखना, उनकी सूचियाँ बनाना और जब आवश्यकता हो तब उपलब्ध करा देना जैसे कार्य अभिलेखागार प्रबंधन में महत्त्वपूर्ण होते हैं । अतः ये अभिलेख अथवा दस्तावेज ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत विश्वसनीय

माने जाते हैं। संगणकीय प्रणालियों के उपयोग के कारण ग्रंथालय और अभिलेखागार का आधुनिक समय में प्रबंधन करना अनिवार्य रूप से सूचना एवं प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ा गया है ।

भारत का प्रथम सरकारी अभिलेखागार कोलकाता में १८९१ ई. में 'इंपीरियल रेकॉर्ड डिपार्टमेंट' के नाम से स्थापित हुआ । १९११ ई. में उसे दिल्ली में स्थानांतरित किया गया ।

१९९८ ई. में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति के.आर.नारायणन ने घोषणा की कि इस अभिलेखागार को 'राष्ट्रीय अभिलेखागार' के रूप में जनता के लिए खोल दिया गया है । यह भारत सरकार के सांस्कृतिक मंत्रालय के अंतर्गत एक विभाग है । यहाँ १७४८ ई. के पश्चात के दस्तावेज/अभिलेख क्रमिक रूप में लगाकर रखे हैं । उनमें अंग्रेजी, अरबी, हिंदी, फारसी, संस्कृत, उर्दू भाषाओं और घसीटा (सर्राफा) लिपि में अंकित बातों का समावेश है । इन अंकित बातों का वर्गीकरण चार प्रकारों-सार्वजनिक, प्राच्य विद्याविषयक, पांडुलिपियाँ और निजी कागजात/दस्तावेज में किया गया है ।

इसके अतिरिक्त भारत के प्रत्येक राज्य सरकार का स्वतंत्र अभिलेखागार है । महाराष्ट्र राज्य शासन के अभिलेखागार संचालनालय की शाखाएँ मुंबई, पुणे, कोल्हापुर, औरंगाबाद और नागपुर में हैं । पुणे के अभिलेखागार में मराठों के इतिहास से संबंधित लगभग पाँच करोड़ घसीटा (सर्राफा) लिपि में लिखे गए कागजात/दस्तावेज हैं । इसे 'पेशवे दप्तर' (पेशवाओं के कागजात) कहते हैं ।

९.४ कोश

शब्दों, विविध जानकारियों अथवा ज्ञान का वैज्ञानिक ढंग से किए गए संग्रह को कोश कहते हैं। विभिन्न प्रकार के ज्ञान का विशिष्ट पद्धति द्वारा किया गया संकलन और प्रस्तुति को कोश कहते हैं। कोश का उद्देश्य उपलब्ध ज्ञान का प्रबंधन करना और सुलभ ढंग से उसको उपलब्ध कराने की सुविधा निर्माण करना है ।

कोश की आवश्यकता : कोश के कारण पाठकों तक ज्ञान पहुँचाया जाता है । उनकी जिज्ञासा को शांत करने का प्रयास किया जाता है । किसी मुद्दे को विस्तार में स्पष्ट किया जाता है । पाठकों को अपने अध्यावसाय में वृद्धि करने की प्रेरणा प्राप्त होती है । अध्येताओं, शोधकर्ताओं के लिए कोश ज्ञान का पूर्वसंग्रह उपलब्ध कराकर उसमें और अधिक जोड़ने की तथा अनुसंधान करने की आवश्यकता निर्माण करते हैं । कोश राष्ट्रीय, सांस्कृतिक स्थिति का प्रतीक होते हैं । समाज की बौद्धिक और सांस्कृतिक आवश्यकता जिस प्रकार की होगी; उस प्रकार के कोश का निर्माण उस-उस समाज में होता रहता है ।

कोश में जानकारी देते समय अचूकता, सटीकता, वस्तुनिष्ठता, बद्धता और अद्यतनता जैसी बातों की आवश्यकता होती है । अद्यतनता को बनाए रखने के लिए निश्चित समय के उपरांत कोश के संशोधित संस्करण अथवा पूरक संस्करण निकाले जाते हैं ।

कोश का निर्माण करते समय अक्षरों की बनावट और विषयवार ये दो पद्धतियाँ मोटे तौर पर उपयोग में लाई जाती हैं । यह करते समय पाठकों को सुविधा प्राप्त होगी और जानकारी खोजने में सरलता होगी; इन बातों को ध्यान में रखना पड़ता है। कोश के अंत में यदि सूची दी गई होगी तो पाठकों के लिए उत्तम सुविधा हो जाती है ।

उपरोक्त पद्धति की कोशनिर्मिति कोई व्यक्ति अथवा संपादक मंडल कर सकता है । कोश का लेखन करते समय विविध विषयों के तज्ञों की आवश्यकता अनुभव होती है ।

कोशों के प्रकार : कोशों का सामान्यतः चार विभागों में वर्गीकरण किया जा सकता है । (१) शब्दकोश (२) विश्वकोश (३) कोशसदृश वाङ्मय (४) सूची वाङ्मय.

(१) शब्दकोश : इसमें शब्दों का संग्रह, शब्दों के अर्थ, पर्यायवाची शब्द, शब्दों की व्युत्पत्ति दी जाती है । शब्दकोशों के महत्त्वपूर्ण प्रकारों में

सर्वसंग्राहक, विशिष्ट शब्दकोश, पारिभाषिक शब्दकोश, व्युत्पत्तिकोश, समानार्थी अथवा विरुद्धार्थी शब्दकोश, मुहावरे-कहावतों का संग्रहकोश आदि ।

(२) विश्वकोश : विश्वकोश के दो भेद हैं । (अ) सर्वसंग्राहक (जैसे-इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, महाराष्ट्रीय ज्ञानकोश, मराठी विश्वकोश आदि) (आ) विशिष्ट विषयपर कोश - यह किसी विशिष्ट विषय से संबंधित होते हैं । जैसे-भारतीय संस्कृति कोश, व्यायाम ज्ञानकोश आदि ।

(३) कोशसदृश वाङ्मय : इसमें किसी विषय की समग्र प्रस्तुति की जाती है । इसमें किसी विशिष्ट विषय से संबंधित लेख तज्ञों द्वारा लिखवाए जाते हैं और ग्रंथ का निर्माण किया जाता है । जैसे- महाराष्ट्र जीवन खंड-१,२, शहर पुणे खंड-१,२, ईयर बुक (मनोरमा, टाइम्स ऑफ इंडिया)

(४) सूची वाङ्मय : ग्रंथ के अंत में उस ग्रंथ के व्यक्ति, विषय, स्थान और ग्रंथों की सूची, शब्दों की क्रमबद्धता को सूची कहते हैं । यह सूची संबंधित ग्रंथ को पढ़ने में सहायता पहुँचाती है । जैसे-दाते द्वारा मराठी पत्रिकाओं की सिद्ध की हुई सूची ।

कोश और इतिहास : इतिहास विषय और कोश में वस्तुनिष्ठता को महत्त्व है । यह इन दोनों के बीच की समान डोर है । प्रत्येक राष्ट्र और प्रत्येक भाषा के विश्वकोश अलग-अलग होते हैं क्योंकि उनका प्राथमिकताक्रम अलग-अलग होता है । कोश पर स्वराष्ट्र के उद्देश्य-नीतियों, जीवनमूल्यों, आदर्शों का प्रभाव पड़ता है । कोश पर दर्शन और परंपराओं का भी प्रभाव पड़ता है । कोशों द्वारा राष्ट्रीय अस्मिता को जागृत करने का प्रयास भी किया जा सकता है। जैसे-महादेव शास्त्री जोशी द्वारा संपादित भारतीय संस्कृति कोश । जीवन के विविध क्षेत्रों का ज्ञान सभी के विकास के लिए उपलब्ध कराना कोश निर्माण की एक प्रेरणा होती है । ज्ञानार्जन और ज्ञानप्रसार को जीवन श्रद्धा मानकर कोश निर्माण के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक स्वरूप में प्रयास किए जाते हैं । अतः कोश को समाज का गौरव चिह्न मानना चाहिए ।

क्या, आप जानते हैं ?

पश्चिमी देशों में (१) 'नैचरल हिस्ट्री' (ई. की प्रथम शताब्दी) यह प्रथम प्लिनी द्वारा रचित कोश है ।

(२) १८ वीं शताब्दी का फ्रेंच विश्वकोश जो डिडेराँ द्वारा लिखित है; महत्त्वपूर्ण कोश है ।

(३) इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका यह विश्वकोश सबसे पहले १७६७ ई. में प्रकाशित हुआ । यह विश्वकोश कोशनिर्माण की प्रगति यात्रा में अत्यंत महत्त्वपूर्ण चरण माना जाता है ।

संस्कृत भाषा में निघंटू, धातुपाठ जैसे शब्दकोशों की परंपरा प्राचीन है । मध्ययुग में महानुभाव पंथियों की कोशरचना, छत्रपति शिवाजी महाराज के कार्यकाल में बनाया गया राज्यव्यवहारकोश महत्त्वपूर्ण हैं ।

कोशरचना में समाज की प्रज्ञा और प्रतिभा की प्रातिनिधिक अभिव्यक्ति देखने को मिलती है ।

इतिहास विषय से संबंधित कोश : इतिहास के विषय की कोश परंपरा समृद्ध है । रघुनाथ भास्कर गोड़बोले द्वारा रचित भारतवर्षीय प्राचीन ऐतिहासिक कोश (१८७६) आद्यकोश है । भारतवर्षीय प्राचीन ऐतिहासिक कोश में प्राचीन कालखंड के व्यक्तियों और स्थानों का अंतर्भाव है । इस कोश में 'भरतवर्ष में पहले हमारे बीच जो-जो विख्यात लोग हुए हैं; उनका, उनकी पत्नियाँ, उनके पुत्र, उनके धर्म, उनके देश और राजधानियाँ तथा उन देशों की नदियाँ और पर्वत इत्यादि सहित... जो इतिहास है; वह' इसमें दिया गया है ।

श्रीधर व्यंकटेश केतकर द्वारा रचित 'महाराष्ट्रीय ज्ञानकोश' के तेईस खंड हैं । मराठी लोगों को बहुश्रुत बनाएँ, उनके ज्ञान का दायरा फैले, उनके विचारों का क्षेत्र अधिक व्यापक हो और विश्व के उन्नत लोगों के साथ-साथ हमारे लोग प्रगल्भ बनें; यह भूमिका ज्ञानकोश निर्माण के पीछे केतकर की थी । इन खंडों

द्वारा केतकर ने व्यापक इतिहास की प्रस्तुति की ।

इसके बाद का महत्वपूर्ण कोश अर्थात भारतवर्षीय चरित्रकोश है । सिद्धेश्वर शास्त्री चित्राव ने 'भारतीय चरित्रकोश मंडल' की स्थापना कर उसके द्वारा भारतवर्षीय प्राचीन चरित्रकोश (१९३२ ई.), भारतवर्षीय मध्ययुगीन चरित्रकोश (१९३७ ई.), भारतवर्षीय अर्वाचीन चरित्रकोश (१९४६ ई.) इन तीन चरित्रकोशों का संपादन करके प्रकाशित कराए । इन कोशों का अनुमान करने के लिए प्राचीन चरित्रकोश में अंकित विवरणों को देखा जा सकता है । इस कोश में श्रुति, स्मृति, सूत्र, वेदांग, उपनिषद, पुराण तथा जैन एवं बौद्ध साहित्य में निर्देशित व्यक्तियों की जानकारी दी गई है ।

क्या, आप जानते हैं ?

कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण कोश

(१) संगीत शास्त्रकार एवं कलाकार का इतिहास (लक्ष्मण दत्तात्रय जोशी)

(२) क्रांतिकारियों का चरित्रकोश (शं.रा.दाते) जिसमें भारत के लगभग २५० क्रांतिकारियों के चरित्र और तस्वीरें हैं ।

(३) स्वतंत्रता सेनानी: चरित्रकोश (न.र.फाटक) इस कोश में स्वतंत्रता युद्ध में प्रत्यक्ष प्राणदंड, बंदीगृह भोगे हुए और स्वतंत्रतापूर्व समय में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किए हुए स्वतंत्रता सेनानियों की जानकारी है ।

स्थल कोश : इतिहास का अध्ययन करने के लिए भूगोल का महत्त्व है । विविध ऐतिहासिक स्थानों के संदर्भ में जानकारी देने वाले कोश हैं ।

(१) महानुभाव पंथ के मुनि व्यास द्वारा रचित स्थानपोथी (१४ वीं शताब्दी) ग्रंथ में महानुभाव पंथ के प्रवर्तक श्रीचक्रधर स्वामी जिन गाँवों में गए; उन गाँवों का विवरण अंकित है । इस ग्रंथ द्वारा तत्कालीन महाराष्ट्र की कल्पना की जा सकती है । लीलाचरित्र की विविध घटनाएँ कब, कहाँ और किन प्रसंगों के कारण घटित हुईं; ये स्थान भी पोथीकार बताते हैं । अतः श्रीचक्रधर स्वामी का चरित्र लिखने के लिए यह उत्तम संदर्भ ग्रंथ है ।

(२) प्राचीन भारतीय स्थलकोश (१९६९ ई.) : इस कोश का निर्माण सिद्धेश्वर शास्त्री चित्राव ने किया है । इस कोश में वैदिक साहित्य, कौटिलीय अर्थशास्त्र, पाणिनि का व्याकरण, वाल्मीकि-रामायण, महाभारत, पुराण, मध्ययुगीन संस्कृत और शब्दकोश साहित्य तथा फारसी, जैन, बौद्ध, ग्रीक और चीनी साहित्य में उल्लिखित भौगोलिक स्थानों की जानकारी दी गई है ।

विश्वकोश : महाराष्ट्र राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण थे । उन्होंने मराठी भाषा और साहित्य की अभिवृद्धि के लिए महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृति मंडल की ओर से मराठी विश्वकोश निर्माण को प्रोत्साहन दिया । तर्कतीर्थ लक्ष्मण शास्त्री जोशी के मार्गदर्शन में विश्व कोश निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ । इन कोशों में विश्वभर का ज्ञान सार रूप में लाया गया है । इतिहास विषय से संबंधित महत्त्वपूर्ण विवरण इसमें अंकित है ।

भारतीय संस्कृति कोश : महादेव शास्त्री जोशी के संपादकत्व में भारतीय संस्कृति कोश के दस खंड बनाए गए । इन कोशों में आसेतुहिमाचल जैसे भारत का इतिहास, भूगोल, भिन्न-भिन्न भाषाई लोग, उनके द्वारा रचा गया इतिहास, तीज-त्योहार, सांस्कृतिक बातों का उल्लेख किया गया है ।

संज्ञा कोश : इतिहास की संज्ञाएँ अथवा अवधारणाएँ अलग कर उन्हें स्पष्ट और समझाकर बतानेवाले कोश इतिहास में तैयार किए जाते हैं । अध्ययनकर्ताओं को उसका उपयोग होता है ।

इतिहास विषय के अध्ययनकर्ताओं को कोश निर्माण कार्य में भरपूर अवसर उपलब्ध हैं । किसी भी विषय से संबंधित कोश हो; उसे इतिहास से जोड़ना आवश्यक होता है । प्रत्येक विषय का अपना इतिहास होता है । इतिहास के अध्ययनकर्ता कोशों के अध्ययन द्वारा घटना कोश, दिनविशेष, व्यक्ति

कोश, संज्ञा कोश, स्थान कोश आदि कोश तैयार करने में सहभागी बन सकते हैं ।

इस पाठ्यपुस्तक का अध्ययन करने के पश्चात आपके ध्यान में आया होगा कि इतिहास विषय में प्रवीणता प्राप्त करें तो अनेक क्षेत्रों में व्यवसाय के अवसर उपलब्ध हो सकते हैं । इस पाठ्यपुस्तक में दी गई जानकारी का उपयोग कर आप अपनी रुचि और पसंद के अनुसार भविष्य के कार्यक्षेत्र का चुनाव कर सकेंगे ।

स्वाध्याय

१. (अ) दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण कीजिए ।

(१) विश्वविख्यात इतालवी चित्रकार लियोनार्दो-द-विंसी द्वारा खींचा हुआ ..... चित्र का समावेश लुव्र संग्रहालय में है ।
(अ) नेपोलियन (ब) मोनालिसा
(क) हैंस स्लोअन (ड) द्वितीय जॉर्ज

(२) कोलकाता का ..... भारत का प्रथम संग्रहालय है ।
(अ) गवरमेंट म्यूजियम
(ब) राष्ट्रीय वस्तु संग्रहालय
(क) छत्रपति शिवाजी महाराज वस्तु संग्रहालय
(ड) भारतीय संग्रहालय

(ब) निम्न में से असत्य जोड़ी को पहचानकर लिखिए ।

(१) महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय - दिल्ली
(२) बनारस हिंदू विश्वविद्यालय - वाराणसी
(३) अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी - अलीगढ़
(४) जिवाजी विश्वविद्यालय - ग्वालियर

२. निम्न कथन कारणसहित स्पष्ट कीजिए ।

(१) अभिलेखागार और ग्रंथालय पत्रिकाएँ और अन्य साहित्य प्रकाशित करते हैं ।
(२) विविध विषयों से संबंधित कार्य करने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है ।

३. टिप्पणी लिखिए ।

(१) स्थल कोश (२) विश्वकोश
(३) संज्ञा कोश (४) सरस्वती महल ग्रंथालय

४. निम्न संकल्पना चित्र को पूर्ण कीजिए ।

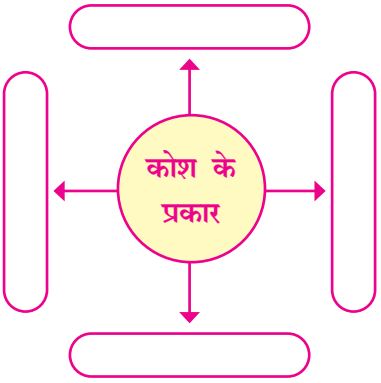

उपक्रम

अंतरजाल की सहायता से महाराष्ट्र के प्रमुख ग्रंथालयों की जानकारी प्राप्त कीजिए । अपने परिसर के ग्रंथालय में जाइए और वहाँ की कार्यप्रणाली को समझिए ।

3IYRXH